

समकालीन भारत में विद्यालय के शिक्षक की भूमिका और चुनौतियाँ

आसिफ अख्तर

परिचय :

आज दुनिया के कई हिस्सों में तेजी के साथ सामाजिक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। इस बदलाव से कई व्यवसायों की कार्यात्मक गतिशीलता में परिवर्तन आया है। शिक्षण एक ऐसा ही व्यवसाय है। शिक्षक बदलते हुए समय के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ तो सम्भाल ही रहे हैं, साथ में वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक बार फिर अपना मुकाम बना रहे हैं। हमारे देश में, मुख्य रूप से 1990 के बाद से, ऐसे परिवर्तन आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति से प्रेरित रहे हैं। उदारवादी नीति के कारण भारतीय समाज में ऊर्ध्वगामी सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है। इसने युवा पीढ़ी को कई प्रकार से प्रभावित किया है। शिक्षकों ने न केवल अपनी भूमिका में हो रहे बदलावों को समझा है बल्कि उनसे निपटने के तरीकों का विकास भी किया है। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए इस लेख में भारतीय समाज में शिक्षकों की भूमिका और चुनौतियों को संक्षिप्त रूप से समझने का प्रयास किया गया है।

हम यह तो जानते हैं कि शिक्षण एक जटिल गतिविधि है, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें एक नियंत्रित माहौल प्रदान किया जाता है ताकि शिक्षक विद्यार्थियों में पूर्व-निर्धारित अधिगम का विकास कर सकें। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में वांछनीय परिवर्तन लाना है। पारम्परिक रूप से शिक्षण शब्द का अर्थ है शिक्षक-केन्द्रित गतिविधि, यानी जिसमें शिक्षक को ज्ञान का स्रोत और विद्यार्थी को उस ज्ञान का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता माना जाता है। यही कारण था कि शिक्षक को अधिकारपूर्ण और अपराजेय माना जाने लगा।

पिछले कुछ वर्षों में शिक्षकों की पारम्परिक भूमिका को फिर से परिभाषित किया गया है। शिक्षक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (NCFTE), की रूपरेखा 2009 के अनुसार शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों को केवल ज्ञान के प्राप्तकर्ता के रूप में न देखकर अधिगम के सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में देखें। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के लिए नाटक, प्रायोजना, चर्चा, संवाद, अवलोकन, शैक्षिक भ्रमण जैसे क्रियाकलापों का आयोजन करें ताकि उन्हें विद्यार्थी-केन्द्रित, गतिविधि आधारित व सहभागी अधिगम के अनुभव प्राप्त हो सकें और उत्पादक कार्यों के साथ शैक्षिक अधिगम का एकीकरण हो जाए। इस प्रकार यह ज्ञान के निर्माण का समर्थन करता है, न कि ज्ञान के शिक्षण का, जैसा कि Dwyer, et al (1991) ने कक्षा में ज्ञान के उपागमों के बारे में बताते हुए सुझाया है। इस मॉडल में शिक्षक व विद्यार्थी दोनों के लिए मुख्य शब्द है सहयोग। नीचे दिए गए आरेख में इन दोनों तरीकों का अन्तर दर्शाया गया है:

	ज्ञान का शिक्षण	ज्ञान का निर्माण
कक्षा गतिविधि	शिक्षक केन्द्रित (प्रबोधात्मक)	विद्यार्थी केन्द्रित (अन्तःक्रियात्मक)
शिक्षक की भूमिका	तथ्य बताने वाला (हमेशा विशेषज्ञ)	सहयोगी (कभी-कभी शिक्षार्थी)
विद्यार्थी की भूमिका	श्रोता (हमेशा विद्यार्थी)	सहयोगी (कभी-कभी विशेषज्ञ)
शैक्षणिक बल	तथ्य (याद करना)	सम्बन्ध(पूछताछ और आविष्कार)
ज्ञान की अवधारणा	तथ्यों का संग्रह	तथ्यों का रूपान्तरण

	ज्ञान का शिक्षण	ज्ञान का निर्माण
सफलता का प्रदर्शन	परिमाण	समझने की गुणवत्ता
आकलन	नॉर्म सन्दर्भित (बहुविकल्पी आइटम)	मानदण्ड सन्दर्भित (पोर्टफोलियो और प्रदर्शन)
तकनीकी प्रयोग	(ड्रिल और अभ्यास)	संचार (सहयोग, जानकारी उपागम, अभिव्यक्ति)

Dwyer et al, 1991

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षकों से यह अपेक्षा की गई है कि वे बच्चों के अधिगम के लिए इस तरह से सुगमकर्ता बनें जिससे बच्चों को ज्ञान और उसके अर्थ के निर्माण में मदद मिले। एक तरफ शिक्षक को ज्ञान के सह-निर्माता के रूप में देखा जाता है और दूसरी ओर पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण में भागीदार के रूप में।

लेकिन ऐसी बहुमुखी भूमिकाओं के लिए पाठ्यक्रम, विषय-सामग्री और अध्यापन कला के साथ-साथ समुदाय, स्कूल संरचना और प्रबन्धन के बारे में व्यापक समझ की भी आवश्यकता होती है। सहयोगी और सुगमकर्ता की शैक्षणिक भूमिकाओं के अलावा आज के शिक्षक शिक्षार्थी, सलाहकार, प्रबन्धक, आकलनकर्ता और नवप्रवर्तक के रूप में भी कार्य करते हैं।

एक शिक्षार्थी के रूप में शिक्षक

शिक्षक को एक ऐसा शिक्षार्थी माना जाता है जो जीवन भर सीखता रहता है। भारत और अन्य स्थानों में शिक्षण में पेशेवर डिग्री प्राप्त करने के बाद विद्यालयों में शिक्षक नियुक्त किए जाते हैं। नियुक्ति के बाद शिक्षकों को विभिन्न प्रशिक्षण दिए जाते हैं जो सरकारी विद्यालयों में अनिवार्य हैं लेकिन निजी स्कूलों में वैकल्पिक हैं। पर सवाल यह है कि क्या सेवापूर्व और सेवाकालीन ये प्रशिक्षण शिक्षकों में आजीवन सीखने की भावना पैदा कर पाते हैं। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड, के संकाय के एक वरिष्ठ सदस्य पी.सी. चन्दोला ने बताया कि इस वर्ष PINDICS (Performance Indicators of Elementary School Teachers यानी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के प्रदर्शन संकेतक) को सेवाकालीन शिक्षकों के प्रशिक्षण का अनिवार्य घटक बनाया गया है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण मॉड्यूल में बताए गए चार संकेतकों में से एक स्व-विकास है जो शिक्षकों के स्व-अधिगम पर केन्द्रित है। उन्होंने स्टीव जॉब्स के प्रसिद्ध शब्द 'भूखे रहें, बेवकूफ रहें' उद्धृत किए। उन्होंने आगे यह भी कहा कि समय के साथ पाठ्यक्रम, विषयवस्तु और मान्यताएँ बदल जाती हैं इसलिए सीखने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

इसके विपरीत सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों से लैस विद्यार्थी कक्षा में शिक्षकों के सामने बड़ी चुनौती पैदा कर रहे हैं। पटना, बिहार में स्थित भारत की एक बड़ी निजी विद्यालयों की शृंखला के एक विद्यालय में कार्यरत भूगोल शिक्षक सलाहुद्दीन अहमद का कहना है कि वर्तमान में इंटरनेट तक आसान पहुँच ही वह चुनौती है जिसे विद्यार्थी अपने शिक्षकों के सामने रख रहे हैं। परिणामस्वरूप विषयवस्तु और अध्यापन कला के कई उपकरणों का कम ज्ञान रखने वाले शिक्षकों का अपनी कक्षाओं पर नियंत्रण कम होता जा रहा है। वे आगे कहते हैं कि अगर कोई विद्यार्थी कुछ पूछता है और उसके बारे में उसे जानकारी मिल जाती है तब कक्षा में कोई गड़बड़ी नहीं होती। टोरंटो विश्वविद्यालय के ओंटारियो इंस्टीट्यूट फॉर स्टडीज के अवकाश प्राप्त प्रतिष्ठित प्रोफेसर माइकल फुलन ने कई साल पहले इस स्थिति की भविष्यवाणी कर दी थी और शिक्षकों के पेशेवर अधिगम के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी (पी.एल.सी.) के गठन की बात कही थी।

सलाहकार के रूप में शिक्षक

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों पर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र यह कहता है कि समकालीन भारत में किशोरावस्था का करीबी अध्ययन कई नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है जो संक्रमण काल में व्यक्तिगत एवं सामाजिक अशान्ति का परिणाम है। आगे यह कहता है कि शिक्षकों के लिए बचपन और किशोरावस्था की सामाजिक रचना के साथ जुड़ना जरूरी है। इन सरोकारों को देखते हुए शिक्षक की कैसी भूमिका पर विचार किया जा सकता है? तकनीकी तक आसान पहुँच के कारण विद्यार्थियों की असुरक्षितता अपनी चरम सीमा पर है। मुम्बई के मालखुर्द रेलवे स्टेशन के पास के एक नगरपालिका विद्यालय के शिक्षक मुल्ला आदम का कहना है कि आज के विद्यार्थी को साइबर कैफे में यौन वीडियो बड़ी आसानी से और सस्ते में देखने को मिल जाते हैं। पहले तो सिनेमाघरों में 18 साल से कम उम्र के बच्चों पर वयस्क फिल्में देखने पर प्रतिबन्ध था। लेकिन तकनीकी के दुरुपयोग के कारण ये सीमाएँ टूट गई हैं। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक के रूप में, आज विद्यालयों में ऐसे मुद्दों पर खुली बातचीत और विद्यार्थियों को सलाह देना अनिवार्य हो गया है। उनके अनुसार विद्यालय के विद्यार्थियों को तकनीकी का उपयोग करने के बारे में संवेदनशील बनाने की बड़ी जरूरत है ताकि किशोरों की अपराध दर को कम करने में मदद हो सके।

आइए, अब हम यह विचार करें कि अन्य विद्यालयों में शिक्षकों को सलाह देने के कितने अवसर मिलते हैं। सरकारी विद्यालयों की तुलना में निजी विद्यालयों में इस बारे में कुछ सीमाएँ हैं। सलाहुद्दीन कहते हैं कि निजी विद्यालयों में अब प्रक्रियाओं के मशीनीकरण पर ध्यान दिया जाता है। स्मार्ट कक्षाओं के आने से विद्यार्थी और शिक्षकों के सम्बन्धों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया कम हो गई है। इससे पहले शिक्षकों को व्यक्तिगत और सामाजिक अशान्ति का सामना कर रहे विद्यार्थियों से बातचीत करने और सलाह देने के अवसर मिलते थे। लेकिन आज ऐसा नहीं है क्योंकि कुछ विद्यालय बहुराष्ट्रीय निगमों की तरह कार्य करते हैं।

प्रबन्धक के रूप में शिक्षक

प्रबन्धक उसे कहते हैं जो निर्णय लेता हो, और इतना सक्षम हो कि परिस्थिति की माँग के अनुसार यह आकलन कर सके कि कैसे बदलना है। पहले यह तीन चरणों तक सीमित था अर्थात शिक्षण के पहले, शिक्षण और शिक्षण के बाद, लेकिन आजकल इसमें कई

गैर-शैक्षणिक गतिविधियाँ शामिल हो गई हैं। एन.सी.एफ. 2005 में इस वास्तविकता के बारे में अफसोस जताया गया है कि विद्यालय के शिक्षकों को जिला अधिकारियों द्वारा गैर-शैक्षणिक कार्य जैसे ग्रामीण विकास योजनाओं, राष्ट्रीय जनगणना, चुनाव कार्य और अन्य अभियानों के लिए आँकड़े इकट्ठा करने को कहा जाता है जिसकी वजह से उन्हें कक्षा से दूर रहना पड़ता है। यह अप्रत्यक्ष रूप से विद्यालय के शिक्षक के गैर-प्रदर्शन को वैधता प्रदान करता है और पेशेवर रूप में कमजोर करता है।

इसी तरह के सरोकारों के बारे में बताते हुए शिव दत्त तिवारी, उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के चौरीकाली खान गाँव के मुख्य अध्यापक उन विद्यार्थियों के साथ सहानुभूति जताते हैं जो पढ़ने के लिए ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ पार करके विद्यालय आते हैं लेकिन वहाँ अपने शिक्षकों को दर्जनों रजिस्टर भरते हुए देखते हैं। उनका कहना है कि शिक्षकों की गैर-शिक्षण सम्बन्धी गतिविधियाँ विद्यार्थियों का समय बरबाद कर रही हैं और उनके भविष्य को खतरे में डाल रही हैं। ऐसे और काम भी हैं जैसे दोपहर के भोजन के लिए सामान खरीदना, स्वास्थ्य की गोलियाँ देना, विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति की राशि जमा करना और निकालना, संकुल संसाधन केन्द्रों से पाठ्यपुस्तकें लेकर आना, विद्यार्थियों का आधार कार्ड नामांकन, निर्माण और चुनाव कार्य, प्रशिक्षण कोर्स में भाग लेना आदि। विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट का मुख्य कारण यही है कि शिक्षकों को गैर-शिक्षण सम्बन्धी गतिविधियों में लगा दिया जाता है और सर्व शिक्षा अभियान के आने के बाद तो यह काफी बढ़ गया है।

आकलनकर्ता के रूप में शिक्षक

बच्चों के निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (आर.टी.ई.) के कार्यान्वयन के बाद कई राज्यों के शिक्षकों का कहना है कि 'अनुत्तीर्ण न करने' और 'शारीरिक दण्ड न देने' की नीतियों ने उनके व्यावसायिक अधिकारों का अतिक्रमण किया है और उनके कार्य को ज्यादा कठिन बना दिया है। दुर्भाग्य से 'अनुत्तीर्ण न करने' और सी.सी.ई. की व्याख्या शिक्षकों की कल्पना पर छोड़ दी गई है। कई शिक्षक 'अनुत्तीर्ण न करने' का मतलब अधिगम के परिणामों का आकलन न करना मानते हैं। यह एक व्यापक मान्यता है कि इन प्रावधानों ने अधिगम के परिणाम कमजोर कर दिए हैं।

सलाहुद्दीन का कहना है कि 'अनुत्तीर्ण न करने' की नीति ने शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की जवाबदेही कम कर दी है। इससे पहले विद्यार्थियों पर परीक्षा में उत्तीर्ण होने का दबाव हुआ करता था, पर आज शैक्षिक और गैर-शैक्षिक क्षेत्रों में जाँच के आधार पर ग्रेडिंग की जाती है। विद्यालय-आधारित ग्रेडिंग 70 प्रतिशत है जिसमें शिक्षक द्वारा पक्षपात होता है क्योंकि विद्यालय-प्रबन्धन और माता-पिता दोनों यही चाहते हैं कि विद्यार्थियों को 10 सी.जी.पी.ए. मिले। इतना उच्च ग्रेड पाने वाले कई विद्यार्थियों में विषय की मूलभूत समझ कम होती है और जब वे उच्च माध्यमिक कक्षाओं में पहुँचते हैं तो इस तरह का आकलन फर्जी बनकर रह जाता है। तब माता-पिता भारी फीस देकर अपने बच्चे को कोचिंग इंस्टीट्यूट में भर्ती करवाते हैं और इतना खर्चा करने के बाद भी आई.आई.टी. परीक्षा की सफलता दर केवल 5 प्रतिशत है।

नवप्रवर्तक के रूप में शिक्षक

परम्परागत रूप से, शिक्षक विषय सामग्री का ज्ञान अपने कॉलेज की शिक्षा और विद्यालयों में प्रयुक्त पाठ्यपुस्तक के माध्यम से प्राप्त करते थे। पाठ्यपुस्तक, श्यामपट्ट, चॉक और कुछ चार्ट व मॉडल शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में प्रयोग किए जाते थे। लेकिन आज, तकनीकी के जानकार शिक्षकों ने शिक्षण-अधिगम सामग्री को एक नया रूप दे दिया है। एन.सी.एफ. 2005 का कहना है कि तकनीकी को शैक्षिक कार्यक्रम के विशाल लक्ष्य और प्रक्रियाओं के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। अल्मोड़ा के पास महतगाँव के माध्यमिक विद्यालय के एक शिक्षक सुरेश चन्द्र ने हाल ही में सूर्य और चन्द्र ग्रहण पर एनीमेशन के साथ पॉवर पॉइंट बनाया ताकि वे अपने विद्यार्थियों को विद्यालय के कम्प्यूटर पर यह अवधारणा समझा सकें। इस एनीमेशन ने विद्यार्थियों को न केवल सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा के साथ ग्रहण के कारणों का सम्बन्ध देखने में मदद की बल्कि इस अमूर्त अवधारणा को समझने भी उन्हें आसानी हुई। अधिगम के इन सकारात्मक परिणामों से प्रेरित होकर कपड़े के टुकड़ों और छड़ियों की सहायता से हिमालय पर्वतमाला दिखाने के लिए एक मॉडल बनाया गया ताकि पहाड़ों, घाटियों, हिमनदों (ग्लेशियरों), सहायक नदियों, डेल्टा, मुहाने आदि के बारे में समझाया जा सके।

चुनौतियों का निवारण

- एन.सी.एफ.टी.ई. में शिक्षक के जिस रूप की कल्पना की गई है उसके लिए सेवा पूर्व प्रशिक्षण को पूरी तरह से बदलना जरूरी है। विद्यालयों की सीमित समझ और सर्टिफिकेट पर आधारित परीक्षाएँ शिक्षक-शिक्षा के लिए हानिकारक हैं और इसलिए अगर गहनता व समयावधि की कमी के लिए इसकी आलोचना की जाती है तो वह ठीक ही है। एक राष्ट्र के रूप में हमें स्वयं को इस बात के लिए प्रतिबद्ध करना होगा कि इस पेशे में सर्वश्रेष्ठ लोग ही आएँ।

- बच्चे के समय और जीवन को समानुभूति और ध्यान के साथ समझना चाहिए। इसके लिए धुन का पक्का और जुनून का होना दोनों जरूरी हैं। विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में जिन चुनौतियों का सामना करते हैं उनसे निपटने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए यह जरूरी है कि शिक्षक में बचपन और किशोरावस्था की गहरी समझ हो।

- जागरूकता और आजीविका के अवसरों की कमी को प्रतियोगी परीक्षाओं की दौड़ के लिए जिम्मेदार माना जाता है। विद्यालय बच्चे की शिक्षा को तो प्रमाणित करते हैं लेकिन उनके लिए एक सम्माननीय और अच्छा जीवन सुनिश्चित नहीं कर पाते, जिसकी गारंटी हमारे देश का संविधान देता है। विद्यालय के विद्यार्थियों के सामने ऐसे रास्ते खोलने चाहिए जिन पर चलकर वे अपने कौशल विकसित कर पाएँ।
- आर्थिक और तकनीकी प्रगति के बावजूद बड़ी संख्या में विद्यार्थी स्कूल छोड़ रहे हैं। एन.सी.एफ. 2005 में सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि-जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक व अन्य समुदायों, लड़कियों तथा अधिगम की भिन्न प्रकार की जरूरत वाले बच्चों के सामाजिक बहिष्करण पर चिन्ता प्रकट की गई है। शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे को शिक्षा मिले।
- शिक्षकों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन विद्यालय में उनके द्वारा शिक्षण के लिए दिए गए समय के आधार पर किया जा सकता है। गैर-शिक्षण गतिविधियों को पूरी तरह से हटा देना चाहिए। ताकि केवल बच्चों को पढ़ाने और उनके जीवन को बदलने का जुनून ही शिक्षकों का एकमात्र उद्देश्य बना रहे।
- चिन्तनशील पेशेवर के रूप में शिक्षक के विकास को उनकी पेशेवर सफलता का शिखर माना जा सकता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब उनकी स्वायत्तता को चुनौती न दी जाए। एन.सी.एफ. 2005 में कहा गया है कि सीखने के ऐसे माहौल के लिए, जो बच्चों की विविध जरूरतों को पूरा करे, शिक्षक की स्वायत्तता जरूरी है। जितने अवसर, स्थान, स्वतत्रंता, लचीलेपन और सम्मान की जरूरत विद्यार्थी को होती है उतनी ही शिक्षक के लिए भी आवश्यक है।

References:

- *National Curriculum Framework for Teacher Education*. New Delhi: National Council for Teacher Education, 2009-10.
- Fullan, Michael and Gerry Smith. “http://michaelfullan.ca/wp-content/uploads/2016/06/13396041050.pdf.” December 1999. *michaelfullan.ca.* 12 September 2016.
- *National Curriculum Framework 2005*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training, 2009.
- “http://www.edu.gov.on.ca/eng/literacynumeracy/inspire/research/PLC.pdf.” October 2007. *www.edu.gov.on.ca. 12 September 2016.*
- *Position Paper National Focus Group Curriculum, Syllabus and Textbooks.* New Delhi: National Council of Educational Research and Training, 2006.
- Ramachandran, Vimala. “The Position of teachers in our education system.” *Learning Curve* (2016): 50-52.
- Teacher- Role and Development. New Delhi: Indira Gandhi National Open University, 2004.

आसिफ अख्तर अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड के सदस्य हैं। इससे पहले वे एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एक दशक से भी अधिक समय तक जीवविज्ञान के शिक्षक रह चुके हैं। अपने स्वैच्छिक कार्यों के अन्तर्गत वे बच्चों के लिए पुस्तकालय और 'नॉलेज सीकर्स' व 'बायो थिंकर्स' जैसे युवा संगठनों की स्थापना कर चुके हैं। वे विज्ञान-शिक्षक-शिक्षा और नेतृत्व के क्षेत्र में कार्य करने में रुचि रखते हैं। उनसे asif.akhtar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल